

स्वप्नमाला

सरिता शर्मा

स्वागत !

कुमारी सरिता शर्मा की स्वोपज्ञ काव्य रचना 'स्वप्नमाला' पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रसाद गुण सरिता शर्मा के इस काव्य संग्रह की बहुत बड़ी विशेषता है। जैसा प्रायः आधुनिक-रचानाओं में देखा जाता है, इन में कहीं भी अर्थ की दुरूहता नहीं है। कवयित्री ने अपने मनो-भावों को बड़ी लालित्य—पूर्ण संघटना शैली में प्रस्तुत किया है। कहीं-कहीं संयमित श्रृंङ्गार है, तो कहीं हृदय द्रवित कर देने वाला करुणा। यह काव्य विशेषज्ञों से छुपा नहीं कि यह दोनों रस ही काव्य की आतमा का संबल होते हैं।

दूसरी बड़ी विशेषता इस संग्रह की यह है कि इसमें किए गए आधुनिक सामाजिक विसंगतियों पर कटु प्रहार, जिनसे यह मात्र काव्य संग्रह न रहकर सामाजिक चेतना का सन्देश वाहक बनकर मानवीय मूल्यों का भी प्रतीक बन गया है। इस संग्रह में शिल्प और वस्तु दोनों का सुन्दर सामंजस्य है, जो कवियित्री की विशेष उपलब्धि माना जा सकता है। कवियित्री का यह प्रथम प्रयास स्वागत योग्य है।

डा० प्रियतम दत्त शास्त्री,

प्रधान

हिन्दी साहित्य मण्डल,

जम्मू।

To

Respected B.L. Nisar 'Dehlvi'

Sarita Sharma
23.5.82.

With Regards
To K.P. Sabha (Regd)
Jammu

17/3/88

President
A. B. S. Sadan (Regd)
JAMMU.

प्रहा

सा

स्वप्न-माला

कविता–संग्रह





सरिता शर्मा



Swapnamala

Hindi Poetry

by

Sarita Sharma

प्रथम संस्करण

जनवरी १९८२

मूल्य : सात रुपये

प्रमुख - विक्रेता

मास्टर राधा कृष्ण आनन्द

एण्ड कम्पनी, पक्का डंगा,

जम्मू ।

लेखिका जम्मू व कश्मीर भाषा, संस्कृति व कला अकादमी के प्रति पुस्तक प्रकाशनार्थ आंशिक आर्थिक-सहयोग के लिए आभारी हैं।

मुद्रक:

चांद प्रैस

गुमट गेट, जम्मू ।

मुख-पृष्ठ :

श्री ओ. पी. शर्मा 'सारथी'

सरिता शर्मा :
कवियित्री के रूप में

विचाराभिव्यक्ति मानव जीवन की नैसर्गिक प्रक्रिया है। यह अभिव्यक्ति उस के परिवेश, अनुभूतियों और प्रतिक्रियाओं की सहज दैन होती है। मनुष्य अपने गुणों और वृत्तियों के अनुरूप ही अभिव्यवित करना हैं। यहां तक कि अपठित और साहित्य से अनभिज्ञ व्यक्ति भी अपने मनोद्गार व्यक्त करते हैं। ऐसी मनोभावों की अभिव्यक्ति आम व्यक्ति, गायक, मूर्त्तिकार भी अपनी कला के माध्यम से करते हैं।

एक साहित्यकार भी अपनी आत्मा की गहराइयों का अपनी कृतियों के माध्यम से प्रकटीकरण करता है। उस की कविताओं एवं पद्य में उस की आत्मा और मनन झलकता है।

"अग्नि पुराण" में कवित्व और उस में सिद्ध-हस्तता को 'सुदुर्लभ' बताया गया है,* क्योंकि प्रत्येक पठित या विद्वान व्यक्ति में वे कोमल भाव विद्यमान नहीं होते क्योंकि वे एक कवि-हृदय की ही उपज होते हैं। कवित्व हर व्यक्ति के बस की बात नहीं और कवि-हृदय कविता से पलायन नहीं कर सकता। 'कवि' की व्युत्पत्ति ही रस-भावों का विमर्शन होती है।† इस लिए मेरे विचार में रस-भावों से रहित कविता नहीं।

---

*नरत्वं दुर्लभं लोके, विद्या तत्र सुदुर्लभा.
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिमात्र सुदुर्लभा।
†कवयति रस भावान विमृश्यति-इति कवि।

सरिता भी इसी साहित्य-सृजन परम्परा की एक देन है। वह एक कवियित्री तो है, पर भावुकता-पूर्ण। यही भावुकता उस की विशेषता है। वैसे भावुकता एक कवि के लिए आवश्यक होती है, क्यों कि प्रत्येक घटना, अनुभूति और प्रतीति को भावुकता के आवेश में कविता के रूप में पेश करना ही कविता की प्रमुख कसौटी है। अन्यथा किसी बात को यथा-तथ्य रूप में प्रस्तुत करना कविता नहीं।

सरिता ने इसी दृष्टि से अपनी कविताओं का सृजन किया है। उस की कविता में कुछ घटित घटनाओं, अनुभूतियों, प्रतीतियों के प्रति प्रतिक्रिया भी है और कुछ तथाकथित परम्पराओं के प्रति विद्रोह भी झलकता है। कविताएं विविधता-पूर्ण, सरस, सरल और सहज हैं, जो कि सामान्य तौर पर आम प्रतीत होते हुए भी गाम्भीर्य और दूर-रस विधेय लिए हैं। यही इन कविताओं की विशेषता है!

सरिता बड़ी से बड़ी बात आम शब्दों में कह जाती है, जो देखने में आम, पर चिन्तन पर विशिष्ट लगती है। यही कारण है कि उस की प्रत्येक कविता, जो कि विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई, या आकाशवाणी से प्रसारित हुई, बड़ी प्रशस्ति और अनुरूप प्रतिक्रिया का भाजन बनी और मुझे यह देख कर प्रसन्नता हुई कि उस की कविताएं लग भग भारत के प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं के कालमों पर उभर चुकी हैं। साहित्य व पत्रकारिता उस के जीवन के दो प्रमुख अंग हैं।

आज उस की कविताओं का प्रथम संकलन मेरे समक्ष है। प्रत्येक कविता की व्याख्या या समालोचना यहां अभीष्ट नहीं। मैं उदाहरण के तौर पर कुछ पद्यांश यहां उद्धृत करना आवश्यक समझता हूं, ताकि उस की काव्य-कला की एक झलक मिल सके। उस के काव्य में स्वाभाविकता है, सरसता और सरलता है, व्यंग्य और कल्पना की उड़ान है। कहीं कहीं करुणा और विप्रलम्भ है और कहीं कहीं दार्शनिकता भी।

सरिता नदी का पर्यायवाची है और इस नदिया से ही उस ने एक नारी की तुलना की है, जिस में 'स्थिरता, सहनशीलता और भरपूर धीरता' है। वह मर्यादा में बंधी शांत-भाव से चलती है। जब वह बिफरती है तो सभी तट-बन्ध तोड़ डालती है। उस में स्वाभिमान भी है और बलिदान भी।

जीवन के बारे में उस का दृष्टिकोण बड़ा यथार्थ-पूर्ण है। उस का कहना है कि—

यह विवशता है मानव की,
कि उसे जीना पड़ता है।

यही नहीं, वह जीवन को एक पहेली मानती है, जिसे सुलझाना असंभव है और उस के शब्दों में—

जीवन एक पहेली है,
जो सुलझाई जाती ही नहीं।

और वह जीवन के गोरखधंधे पर शोध करना ही नहीं चाहती, बल्कि उस के विभिन्न पहलुओं को भी उजागर करती है। वह अज्ञात के प्रति पूर्ण समर्पण को ही जीवन मानती है—

जीवन का अर्थ नहीं मुझे ज्ञात,
जीवन-केवल अज्ञात के प्रति पूर्ण समर्पण।

इस में दर्शनिकता की पुट है, जिसे उसने अपने सरल शब्दों और भावों से उभारा है। ऐसी ही दार्शनिकता उस की कविता 'विश्व-स्वरूप' में मिलता है, जिस में उसने समस्त विश्व को एक चित्र के रूप में चित्रित किया है, जिस में कुछ बिन्दु और रेखाएं हैं, जिनका मिलन-विघटन विभिन्न रूप पैदा करता है और इसी में समस्त सृष्टि का रहस्य है।

कु० सरिता की कविताओं में करुणा की गहरी पुट है। वह मानव के दुख दर्द को आत्मसात् करती हुई संसार में व्याप्त स्वार्थ और आपा-धापी पर खीझ प्रकट करती है और व्यंग्यात्मक शैली में लिखती है :

क्या होगा उस जहाज़ का,
जिसको सागर ही खा जाए।

एक अन्य कविता में जहाज़ के डूबने पर उस पर सवार लोगों के भविष्य पर कवियित्री का कोमल हृदय तड़प उठता है। यह घटना दूसरे शब्दों में संसार पर घटित होती हैं, जहां खेवनहार के न रहने से दूसरे लोगों पर क्या कुछ बीतती है। इसी भाव को दूसरी कविता में सिंहासन डोलने की संज्ञा दी गई है :

सिंहासन क्या डोला,
डोल गया सर्वस्व किसी का।

इसी प्रकार वह मानव की मृत्यु का भी विश्लेषण करती हुई उसकी कमणीय काया के निर्दय भाव से जला डालने पर आश्चर्य और दुख प्रकट करती है, जो कि कल तक सभी की प्रिय और आत्मीय होता है।

वह स्मृतियों को मोहक और सुखद मानती हुई, उसे अतीत की कहानी मानती है (स्मृतियां)

शृंगार और विशेषकर विप्रलंभ शृंगार को इस कविता-संग्रह में प्रमुख स्थान प्राप्त है, जिसका एक उदाहरण नीचे देखिए—

"हमने अश्कों से जखम दिल के धो लिए।"

इस प्रकार, मैं समझता हूं कि अपने प्रथम काव्य 'स्वप्न माला' में कु० सरिता की कुछ ऐसी कविताएं संग्रहीत हैं, जो कि उसकी प्रतिभा, चिन्तन, कोमल-भावों और काव्य-कला की प्रखरता का दिग्दर्शन करवाती हैं और उसमे आशा बन्धती है कि जीवन और समय के साथ साथ उसकी लेखनी में प्रौढ़ता आएगी और वह कविता-क्षेत्र में नाम पैदा करेगी। इन शब्दों के साथ मैं इस कविता-संग्रह की सफलता की कामना करता हूं।

'योजना' कार्यालय
जम्मू,

मनसा राम शर्मा 'चंचल'

अपनी बात

आज अपना प्रथम कविता-संग्रह जन-साधारण को समर्पित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। मैं अपने आपको सिद्धहस्त कवियित्री मानने की धृष्टता नहीं करती, क्योंकि कविता बड़ी दूर की वस्तु है।

फिर भी कागज पर उतारे अपने मनोद्‌गारों का संकलन करने की इच्छा संवरण न कर सकी। इस लिए इस पुस्तक के प्रकाशन का प्रयास किया है, ताकि अपने भावों, उद्‌गारों अनुभूतियों और प्रतीतियों को शब्दों का जो आवरण दिया है, उन पाठकों, विद्वानों, समालोचकों और साथी साहित्यकारों के समक्ष पेश कर सकूं। उनकी प्रतिक्रियाओं, समालोचना, सुझावों और संशोधनों का मैं सहर्ष स्वागत करूंगी।

इन कविताओं में मैंने वही कुछ चित्रित किया है, जो मैंने सोचा, समझा या अनुभूत किया या मेरे मन में उद्‌गार उठे। ये सब स्वांन्तः सुखाय ही समझिए। यदि इनमें किसी को कुछ मिल सके तो मैं इसे अपनी सार्थकता ही समझूंगी।

अपने पूजनीय दादा प० चन्द्र नाथ जी से मुझे प्रोत्साहन प्राप्त हुआ और रास्ता स्वर्गीय गुरू मां सपन माला जी ने बताया।

मुझे इस सकलन के लिए मेरे जिन साथियों ने प्रेरणा दी, सम्पादम और प्रकाशन में सहयोग दिया, मैं उनकी भी आभारी हूं।

काव्य-क्षेत्र में अपनी अपूर्णता, छपाई की अस्पष्टता या प्रस्तुतीकरण में कमियों का मुझे एहसास है। इसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूं।

मैं जम्मू व कश्मीर की ललित कला व साहित्य अकादमी की आभारी हूं, जिसने मुझे इस प्रकाशन के लिए आंशिक अनुदान से उत्साहित किया। मैं श्री ओ. पी. 'सारथी' के प्रति भी आभार-प्रदर्शन करना अपना कर्तव्य समझती हूं, जिन्होंने इस पुस्तक को सुंदर आवरण प्रदान किया।

सधन्यवाद

सरिता शर्मा

जुलाहका मुहल्ला, जम्मू।

अनुक्रमणिका

एक :

विवशता

मैं जीवित हूँ,
यह एक तथ्य है।
मेरा अस्तित्व
प्राणि-शास्त्रियों ने स्वीकारा है।
मृत्यु क्या है?
यह रहस्य समझ नहीं पाती।
आकांक्षा - रहित जीवन,
दिशा - हीन यात्रा,
जिस का अन्त नहीं,
यह विडम्बना है,
जीवन की।
विवशता है मानव की—
कि उसे जीना पड़ता है।



दो :

मैं

मैं वह किश्ती हूँ,
जिसकी पतवार ही नहीं।
वह नदिया हूँ,
जिसकी धार ही नहीं।
वह वीणा हूँ,
जिसके तार टूट चुके।
वह यात्री हूँ,
जिसके साथी छूट चुके।
वह बगिया हूँ,
जिसका माली रूठ चुका।
मैं वह बल्लरी हूँ,
जिसका आश्रय टूट चुका।



तीन :

व्यर्थ-विश्वास

तोड़ दो व बेड़ियां
जो जकड़ती पाँव को।
काट दो उस वृक्ष को,
जो रोकता हो छांव को।
औ, मिटा दो झाड़ियों को,
जो बिखेरें शूल ही,
बाग वह विध्वस्त कर दो
जो न चाहे फूल ही।
मंजिलों के मार्ग में जो
विघ्न डालें वे हटा दो
और अपने मार्ग की
सब विघ्न-बाधाएं मिटा दो
जो प्रतीक्षा ही रहे वह
व्यर्थ सी इक आस है,
टूट जाए जो धरा पै—
व्यर्थ का विश्वास है।



यह जीवन

यह जीवन
इक दिशाहीन यात्रा,
जिस पे चलते
आंख मूंद कर
जगती तल के सारे प्राणी,
अनचाहे, अन-सोचे
अनसमझे पथ पर,
यन्त्र-अंग से
एक प्रेरणा किसी शक्ति की
इसे घुमाती
वात-चक्र सी।
गिरते पडते
रोते हँसते
चलना पडता,
अनजाने मग पर,
रुकना तब है
जबकि नियन्ता
हमें रोक दे।
हमें टोक दे।
हमें हटा दे
गलत शब्द सा।



पांच :

टूटी तार

मैं वीणा की टूटी तार।
जो विलग हो झिनझनाती,
और फिर से जुड़ न पाती,
साज़ से मैं, दूर हूँ आब
ज्यों नदिया की सूनी धार।
मैं वीणा की टूटी तार॥

मेरा जीवन सूना सूना,
लक्ष्य को मैंने कब है छूना,
जीवन के उच्छ्वासों का,
दिखता आज नहीं, है पार
मैं वीणा की टूटी तार॥

अब नहीं संगीत में लय है।
औ, जीवन नीरस मय है।
दूर वीणा मौन सी है
अब नहीं है मुझ में सार।
मैं वीणा की टूटी तार॥

एक गुम सुम चाह मेरी
और धूमिल राह मेरी
इन अपरिचित मंजिलों का
नहीं है कोई पारावार।
मैं वीणा की टूटी तार॥



छ :

मैं नदिया

मैं नदिया हूँ, इस अन्तर में,
कितने ही अरमान छिपे हैं।
शान्त भाव की मन्द चाल में,
दुनिया के वरदान छिपे हैं।
मैं नदिया हूँ ।

मुझ में स्थिरता, सहन - शीलता,
शक्ति से भरपूर धीरता,
मैं मन्द चाल से बहती हूँ।
पर दिल में कुछ आह्वान छिपे हैं।
मैं नदिया हूँ... ।

मैं मर्यादा में बंधी हुई
और करुणा से हूं लदी हुई
जब उछल पड़ूँ मैं कभी कभी
तो दिखते, जो तूफान छिपे हैं।
मैं नदिया हूँ... ।

मेरे कुछ बलिदान भी हैं
औ, अन्तर में मृदु - गान भी हैं।
वरदायी इक सलिल की धारा
उसमें कुछ आख्यान छिपे हैं।
मैं नदिया हूं... ।

चाहूं हा-हा-कार मचा दूँ
जल थल से दुनियां दहला दूँ
नावें पोत पलट सब डालूँ
जिन में कुछ अभिमान छिपे हैं।
मैं नदिया हूं इस अंतर में
कितने ही अरमान छिपे हैं।



सात

जीवन-गाथा

अपनी उलझी जीवन गाथा,
कौन सुनेगा किसे सुनायें।

दर्द दिया जो है अपनों ने,
जग में उसको किसे दिखाएं।

यहां के झूठे रिश्ते नाते
किसको त्यागें किसे अपनाएँ

अपना ही जब चैन लुटा हैं
व्यथा क्यों अपनी आप छिपाएं।

गिरते गिरते पीने होंगे,
आंख के आंसू गिर न पाएं।

एक सहारा बन कर आए,
कैसे दिल की बात बताएँ।

सुन कर तुम भी हँसी उड़ाना
गम के बादल घिर घिर आएँ।

आज यह उमड़ी पुनः सरित् है
उनसे कह दो-वे रुक जाएं।



आठ

जीवन-अभिलाषा

मेरी आयु बहुत बड़ी है।
लेकिन जीने की अभिलाषा,
कभी बनी थी।
आज नहीं है।

टूटे सपने,
हृदय भग्न सा,
तार तार हैं दिल के टुकड़े,
छलनी पग हैं,
आग विरह की,
तिल तिल जलती;
निज स्वाभिमान में -
सभी संजो कर
अनुभव करती

यही देन है,
औ, उपलब्धि,
जीवन की, जगती की
औ' उपलब्धि,
जीवन की, जगती की

तप्त देह से
गन्ध है आती,
किसी सड़ांध की—
रोम रोम से टीसें उठतीं
इसी जलन से,
गर्म श्वास हैं,
शीतल आहें,
ले कर जिन को मैं जीती,
जीना होगा,
क्यों कि-मेरी आयु,
बहुत बड़ी है।

O O O

नौ :

मील पत्थर

मैं इक मील-पत्थर हूँ।
जो खड़ा इक दर्शक बन,
उस रास्ते पे,
जहां पे चल कर
सब गुजर जाते हैं।
पहुँच जाते अपने लक्ष्यों पर,
लेकिन मैं लक्ष्य-हीन हूँ
मुझे न आना
न जाना है।
मेरे पास से
लोग गुज़रते हैं,
मुस्कुराते,
गुनगुनाते,
आलिंगन-रत,
या अश्रु बहाते
वे भी, जिन के आंसू
सूख गये हैं।

सभी देखते मुझे यहां पर
कोई न मेरी कथा पूछता
नहीं जानता मेरी व्यथा को
सहानुभूति का
एक शब्द भी
कभी न पड़ता,
मेरे कानों में।

फिर भी मैं इक मील शिला
जो सभी को राह दिखाती
दूरी बताता
ढारस देता हर गन्तुक को।

O O O

जीवन क्या है?

जीवन क्या है?
अजब सी उलझन
एक अनुत्तरित प्रश्न
इक गौण समस्या
सोच सोच कर
समझ न आये
क्या यह है अपना
शायद नहीं है।
एक धरोहर जिस पर
अपना कुछ अधिकार नहीं है।
कौन नियन्ता,
कौन प्रणेता,
किसका इंगित
हमें नचाता
हम यह ढूंढें
भटक भटक कर,

कहां है मंज़िल
कहां ठिकाना
कहां से आए
कहां है जाना
कौन है अपना
जिस को पाना
जीवन यह है अजब सहेली
अन - देखी अन - बुझी पहली ।

O O O

ग्यारह :

नारी

मत समझो मैं इक नारी हूँ,
या आश्रय हीन इक ललना हूँ।
मैं प्रेम भाव की दात्री हूँ,
औ' करुणा की इक प्रतिमा हूँ।
मैं आश्रित हूं या स्वाधीना,
ये तो सब हैं कल्पित बातें।
मैं देती हूं जग को जीवन,
मैं सतत स्नेह लुटाती हूं।
मैं लेकर जग की पीड़ा,
स्वयं हलाहल पीती हूँ।
मैं देती हूँ जग को सांसें,
बिखराती हूं सुख शांति यहां।
अपमान मान निरपेक्षा सी,
सहती रहती क्लांति यहां।
अपना तो है यह जग सारा,
इस वसुधा पै सुख बरसाती हूं।
मैं करुणा की शीतल सरिता,
निज पीड़ा पै मुस्काती हूँ।

O O O

बारह :

दिशा–हीन

निकल पड़ी हूं
दिशा हीन सी
जीवन सागर
गहरा गहरा
अन्त–हीन सा
नहीं है इसका कोई किनारा ।
नहीं जानती पथ मैं अपना
और नहीं है कोई सहारा
इक दीप जलाया आशा का
नहीं आलोकित उससे भी पथ
दूर दूर तक शून्य का घेरा
छिपी हुई है जिसमें मंजिल
नहीं है परिचय आज लक्ष्य का
कहां पहुँचना
कितना चलना
कितनी यात्रा

सब प्रश्न चिन्ह हैं।

फिर भी पग है उठते जाते

किसी दिशा पै

जिसका मुझको ज्ञान नहीं है।

चलती जाती दिशाहीन सी

जीवन पथ पर

धीरे धीरे।



बारह :

दिशा–हीन

निकल पड़ी हूं
दिशा हीन सी
जीवन सागर
गहरा गहरा
अन्त–हीन सा
नहीं है इसका कोई किनारा ।
नहीं जानती पथ मैं अपना
और नहीं है कोई सहारा
इक दीप जलाया आशा का
नहीं आलोकित उससे भी पथ
दूर दूर तक शून्य का घेरा
छिपी हुई है जिसमें मंजिल
नहीं है परिचय आज लक्ष्य का
कहां पहुँचना
कितना चलना
कितनी यात्रा

सब प्रश्न चिन्ह हैं।

फिर भी पग है उठते जाते

किसी दिशा पै

जिसका मुझको ज्ञान नहीं है।

चलती जाती दिशाहीन सी

जीवन पथ पर

धीरे धीरे।



चौदह

क्या होगा ?

क्या होगा उस पहाड़ का,
जिस का आधार ही न रहे।
क्या होगा उस संसार का,
जिस का आचार ही न रहे।
क्या होगा उस जहाज़ का,
जिस को सागर ही खा जाए।
क्या होगा उस आकाश का,
जिस पै घटा ही छा जाए।
क्या होगा उस कली का,
बिन खिले ही जो मुर्झा जाए।
क्या होगा उस चमन का,
जिस पर पतझड़ ही छा जाए।
क्या होगा उस बहार का,
जो जोवन में ही सिमट जाए।
क्या होगा उस अरमान का,
जो हर बार ही मिट जाए।

क्या होगा उस नदिया का
जो बिन पानी रीती ही रहे।
क्या होगा उस नारी का,
जो सदा ग़म पीती ही रहे।

O O

सिंहासन डोला

सिंहासन क्या डोला,
डोल गया सर्वस्व किसी का।
कल का राजा
आज कहां है?
खोया होगा यहीं कहीं।

मिट्टी के अन्तर में
वह सम्मानित
अर्चित प्राणी
चला गया यों
जैसे कुछ भी
यहां नहीं था।

कोमल काया
झुलस गई,
यां भस्म हुई है—
जिस पर था कभी गर्व उसे

कल तक चलता फिरता प्राणी,
निर्जीव बना
लिये जा रहे
कंधें पर रखा उसे मिटाने,
उसे जलाने

कल तक जो था सब का प्रेमी,
सबका प्यारा,
सभी भूल कर
सभी त्याग कर

आज चला निरपेक्ष भाव से
जैसे कोई जड़ सी वस्तु
अर्थ-हीन सी—
दूर कहीं पर
पटकी जाती।

सोलहः

चिर मृत्यु

जीवन का अर्थ,
मुझे नहीं है ज्ञात,
सोचती हूँ दिन रात,
है किसकी यह देन।

जो मुझ से छीन,
दूर— कहीं दूर,
ले जाता है कही
मेरे मन का चैन।

अब मेरे अन्तर :
जीवन की आशा नह
मृत्यु की परिभाषा नह

है केवल——
अज्ञात के प्रति पूर्ण समर्पण।
यदि मिल जाए वह अज्ञात,
तो करूँ——
अपनी चिर जिज्ञासा शान्त।

मेरे जीवन का लक्ष्य
अब केवल रह चुकी है
चिर मृत्यु
जो देगी मुझे चिर मिलन
देगी मुझे पूर्ण शान्ति
और चिर विश्रांति

सोलहः

चिर मृत्यु

जीवन का अर्थ,
मुझे नहीं है ज्ञात,
सोचती हूँ दिन रात,
है किसकी यह देन।

जो मुझ से छीन,
दूर— कहीं दूर,
ले जाता है कही
मेरे मन का चैन।

अब मेरे अन्तर में
जीवन की आशा नहीं
मृत्यु की परिभाषा नहीं

है केवल——
अज्ञात के प्रति पूर्ण समर्पण।
यदि मिल जाए वह अज्ञात,
तो करूँ——
अपनी चिर जिज्ञासा शान्त।

मेरे जीवन का लक्ष्य
अब केवल रह चुकी है
चिर मृत्यु
जो देगी मुझे चिर मिलन
देगी मुझे पूर्ण शान्ति
और चिर विश्रांति

सत्रह :

स्मृतियां

ये स्मृतियां हैं
कितनी मोहक
कितनी सुन्दर और सुहानी
जैसे बीनी एक कहानी
एल्बम हो ज्यों विगत काल की
या फिर हो इतिहास पुराना
औ, चित्र सुहाने
आ जाते हैं
हृदय पटल पर
जिन्हें उठाते
एक धरोहर
समझ के जग में
सुखद कल्पना
मृदु सिहरन सी
बीते युग की
याद करें जब
कुछ जाने अनजाने चेहरे
धुंधली धुंधली सी यादें
और असंगत सी
भी लगती हैं।

मुस्कान अधर पर,
कुछ नादानी
कुछ यादें या।
याद दिलातीं
किसी मिलन की
या बिछुड़न की
गले लगा कर
जिसको हम सब
जीना चाहें सदा सदा को।

O O O

अठारह :

अज्ञात–भय

यह अज्ञात सा भय
यह मन की आशंका
मेरे मन में जाग रही क्यों
मेरा निश्चय मुझे कह रहा
जूझ पड़ूँ मैं अब विषाद से।

बढ़ा दिए पग
अनजाने पथ पर
पीछे मुड़कर
क्यों कर देखूँ
इक निश्चित लक्ष्य
पाने की ही चाह
रुकना मुड़ना
या झुक जाना
कायरता है।

मृत्यु भय या
जीवन की चाहत

बांध नहीं पाते मेरे पग
जब अपना ही लिया
कण्टकाकीर्ण मार्ग
काण्टों से भी मित्रता,

विषमता का किया
जब अलिगंन
तो——
भय कैसा, भीरुता कैसी।

O O O

उन्नीस :

ग़ज़ल

कौन मरता है किसी के मर जाने के साथ,
फूल खिलते हैं बेल के मुरझाने के साथ।
संग संग जीने के बस बहाने हैं,
खत्म हो जाते हैं जो मुस्काने के साथ।
दिल में लाखों अरमां तमन्नाएं हैं,
सभी बाद में जुड़ते हैं अफसाने के साथ।
इक कसक, पीड़ा निराशा ही मिली,
बढ़ती ही गई हर बार सुनाने के साथ।
हमने अश्कों से ज़ख्म दिल से धो डाले,
पर व्यथा बढ़ती ही गई दोहराने के साथ।
तेरे मिलने की यों इक अभिलाषा थी,
जो अधूरी ही रही, तेरे न आने के साथ।

O O O

जीवन-सरिता

जीवन विस्तृत सरिता है,
पर किनारा ही नहीं।
मानव वह हस्ती है
कि सहारा ही नहीं।
प्यार की बहार में
फूल खिलते ही नहीं।
दुःख रूपी पहाड़ पै
सुख मिलते ही नहीं।
जीवन वह पहेली है,
सुलझाई जाती ही नहीं।
जिन्दगी की हवेली यह
गिराई जाती ही नहीं।
मौत ऐसी सच्चाई है
झुठलाई जाती ही नहीं।
प्रीति ऐसी ऊँचाई है,
मिटाई जाती ही नहीं।

O O O

इक्कीस :

जीवन संघर्ष

मैं क्या थी क्या करती रही।
मैं सदा जिन्दगी संग लड़ती रही।

मैं अपनी गाथा सुलझा न सकी
मैं फूलों से निज को बहला न सकी

मैं अरमानो का चाव पीती रही
मैं आत्म-छलना में जीती रही
मैं विषमताओं में ही पलती रही।
मैं सदा जिन्दगी संग लड़ती रही।

मैंने जो सोचा वह हो न सकी
मैं आंसुओं से दिल यह धो न सकी
खो कर चाहा पाना, पर पा न सकी

जीवन कैसा है, मैं मुस्कुरा न सकी
मैं झूठी दुनियां पै ही मरती रही।
मैं सदा जिन्दगी संग लड़ती रही।

वही काटा जो था कभी बोया मैंने,
यों सपनों का इक हार पिरोया मैंने।
मैं न पा सकी जो था चाहा मैंने,
जख्मों पर भी न रखा कोई फाहा मैंने।
मैं गुम-सुम सी पथ पर चलती रही।
मैं सदा जिन्दगी संग लडती रही।
मैं ढूंढ़ती ही रही उन भूली राहों को,
मैं कोसती ही रही अधखिली चाहों को।
मैं भटकती रही खोजती पनाहों को,
मैं तरसती ही रही सच्ची चाहों को।
मैं विषम पथ पर सदा चलती रही,
मैं सदा जिन्दगी संग लड़ती रही।



एक स्वप्न

एक स्वप्न——
देखती हूं......
एकाएक चौंक कर
जागती हूँ......
लगा, कुछ महत्त्व पूर्ण
कुछ चरम-घटित हो रहा है।
एकाएक मस्तिष्क के भीतर
विस्फोट सा होता है
इतना तीव्र......
कि एक दम सुन्न
सा प्रतीत होता है।
एक दम
तेज प्रकाश से
आंखें चौंधिया गई हैं।
ताप का अनुभव करती हूँ
और यह भीषण उद्घोष
लगा अणु विस्फोट हुआ है।

मानों......

एक लाख सूर्य

फटने के बराबर।

बाहर भागती हूं।

इतना ताप......

सहन नहीं होता।

वाष्प कण बनती

उड़ती चली जा रही हूं।

मेरे इस तरह

समाप्त होने से

सृष्टि हंस हंस कर

लोट पोट होती जा रही है।

देखो, देखो......

पटाखे का अस्तित्व

हमें प्रसन्न कर......

समाप्त हो रहा है

हा ...... हा ......हा ......

O O O

तेईस :

जिन्दगी की हवेली

कड ... कड ... ... कड
यह कडकड़ाहट।
नहीं ..... नहीं ...
यह है खड़खड़ाहट।
ज्यों कोई दीवार
गिर रही है
ढह रही है
और ....
सदियों से ...
खड़ी ......
यह जिन्दगी की हवेली
देखते ही देखते
खण्डहरों में ......
परिवर्तित हो रही है
क्यों आशा है अब
कि इन खण्डहरों पर

कोई महल ......

खड़ा करेगा......

नादान मन......

देखता है क्यों सपनें

शायद बेचारा

नहीं जानता......

इन खण्डहरों पर

बनी हवेली......

आज या कल

भयानक खण्डहर बन के

रहेगी ......

और तब......

क्या होगा...... ?

O O O

चौबीस :

दुल्हन

वह जा रही है,
सिकुड़ी सी,
सहमी सी,
शर्माई सी,
देख रही है पीछे,
गुज़रे अतीत को,
बीती यादों को,
औ' सोचती जा रही है,
वह सब,
जो अब नहीं है उसका।
जो हो गया पराया।
वह गुजर रही है
ऐसे इक वर्तमान से
जो लिये जा रहा है
भविष्य की ओर।
जो शायद उसका हो
इक मधुर कल्पना
इक मधुर आस
उस घर की,
जो अभी बसेगा।

अभी खिलेगा।
उभरती है इक चहक,
एक विश्वास,
स्वर हो गया मद्धम।
भाव हो गये कुण्ठित।
शायद सुन रहा है कोई,
वह और भी सिकुड़ गई,
सिमट गई,
क्योंकि छू गया है,
किसी का हाथ,
विद्युत् सी कौंध गई है,
सारे बदन में।
डूब गई अब वह
इक कल्पना जगत में—
आने वाले कल की।

○ ○ ○

पच्चीस :

विश्व-स्वरूप

विश्व - स्वरूप
एक चित्र है
उभरता है बदल कर
कुछ रेखाएं।
यह रेखाएं मिलन है
कुछ बिन्दुओं का।
यह बिन्दु बना है
कुछ और बिन्दुओं से।
उस बिन्दु में बसा है।
इक छोटा सा बिन्दु।
इस बिन्दु में बसा है,
एक शून्य सा।
यही शून्य बनाता है
बिन्दुओं को।
मिलन है परिणाम,
जिसकी रेखाएं।
यही शून्य उभारता है
चित्रों को
है विश्व स्वरूप की
जो परिभाषा

O O O

काश......,

काश! कहीं इस प्रस्तर जग में
छोटे से इक पत्थर होते।
दूर कहीं पर एक किनारे
या चौराहे पर कहीं पै रहते
आते जाते हमें ठोकरें
देकर आगे बढ़ते सब जन
हमें न कोई दुख ही होता,
नहीं किसी से नेह ही होता,
व्यर्थ यहां पर मानव बन कर
हम में कितने दर्द समाए
कितनी टीसें दिल में लेकर
हंसते हंसते सब कुछ झेला,
सदा चहकते और मचलते।
हर ठोकर का घाव हृदय पर
पड़ कर हमें दुखाता
संसृति के इस मोह-पाश से
बचते, रहते सदा सुखी हम
पत्थर दिल बन पत्थर होते,

दुनियां के ये दर्द न होते।
काश, कहीं हम पत्थर होते।
न यादें न शिकवे होते
जली कटी चिकनी चुपड़ी—
बातों से हम दूर ही होते
दुनिया के यों दर्द न सहते।
काश, कहीं हम पत्थर होते।

O O O

सत्ताइस :

समय नहीं है

समय नहीं है।
थकी थकी सी,
यान्त्रिक युग की,
दौड़ धूप में—
पल भर भी आराम नहीं।
विश्राम नहीं।
चाहा पल भर
तनिक बैठ कर
तरू छाया में
सोचूं क्या हूँ।
सोचा कभी मैं जा बैठूँ
किसी सरोवर के तट पर
करूं आलिंगन शीतल जल से
अंजुरी भर भर
पीलूँ सागर।

शान्त करूं निज अभिलाषा
और थकन को।
चलते चलते
जीवन पथ पर
रुकने पर प्रतिबन्ध लगे हैं
दिल बहलाने,
चिन्तन तक का
व्यस्त जगत में
समय नहीं है।

O O O

अठाईस :

विचित्र जिंदगी

यह जिन्दगी भी कैसी,
न जीना यहां गवारा।
मैं असहाय सी यों गुमसुम
कहने को जी रही हूँ,
कहा किसी से कभी न हम ने
तुम मुझ को दो सहारा।
मैं स्वयं ही अपनी किश्ती
धारा में खे रही हूँ।
चाहत नहीं है बाकी
मिल जाए यों किनारा
मैंने तो इस जहां से,
मांगी न कोई वस्तु
सह कर भी गम खुशी से
पर हाथ न पसारा।
मुझको नहीं यह इच्छा,
गाऊं किसी के नगमें
जीने दो इस जहां में
गर यह भी हो गवारा।

O O O

उनतीस :

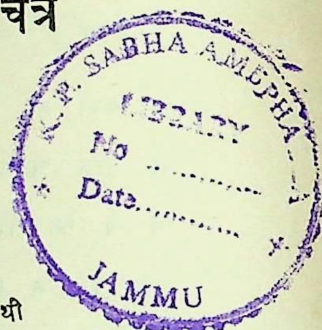
रोशनी और अन्धकार

यह कैसी रोशनी है
यह कैसी लौं है
जो अखरती है मुझे
ले चलो मुझे अंधकार की ओर
जो प्रिय है मुझे
दुनियां में गम है
दुनियां में छलना है
दुनियां है यह मिथ्या
इस में है निर्ममता।
देखती हूँ मैं यह सब
रोशनी में—
दिखाते हैं सब भयंकर रूप
इस लिये बेहतर है
अंधेरा ही रहे
छिप कर इस में
सब कुछ लुप्त रहे
गौण रहे

न कभी हो भोर
न सूरज चमके
न ये गम दिखें,
दुख दर्द न छलनाएं।
मैं सिहर जाती हूँ,
यह सब देख कर
बेहतर है अंधेरा ही रहे
और सब कुछ उसमें ही छिपा रहे।

O O O

कल्पना—चित्र



चित्रकारी का सामान
समक्ष लिये...... ...
ध्यान मग्न यों बैठी थी
नाज - नज़ाकत उधार लाई
तब मैंने तूलिका उठाई
प्यार का बीच में
मीडियम मिलाया
चेहरे से हया का
रंग चुराया
तब मैंने मन के काग़ज़ पै
एक राही का चेहरा बनाया
देख, मुस्काई
इठलाई शरमाई
दी मन की प्रजा ने
मुझे लाख २ बधाई

खुशी से मेरी देह
कपकपाई——
तूलिका ने भी तब
अपनी अदा दिखाई
जिसे देख आंखें
मेरी डबडबाई
देखा चारों ओर
काला ही बस नजर आया
कहां गया वह,
जो मन को था भाया।

O O O

भाग्य—निर्णय

मंजिल की तरफ जब उठ ही गये कदम,
राही का हर कदम चलके ही रहेगा।
करने पै आये हैं वे आज फैसला,
लगता है कुछ न कुछ बन के ही रहेगा।
या तो कुचली जाएंगी नाकाम हसरतें,
औ' जीवन यह सूना बन के ही रहेगा।
ये कदम उठ रहे हैं मिलने को आप ही,
शायद किसी का भाग्य संवर के ही रहेगा।
बहुत सह चुके हैं जमाने की सख्तियां,
हद हो चुकी है, अब सब बदल के ही रहेगा।
जीवन में हमने देखे कितने ही अन्धकार,
यह जग भी तो कभी रोशनी से चमक के ही रहेगा।

O O O.

बत्तीस :

लघु कविताएँ

एक

एक नाव
जिस पर कुछ यात्री
बैठे — —
यात्रा कर रहे थे
बीच मंझदार में
टूट गई ।
दुनियाँ वालो—
यात्रियों का क्या होगा ?

दो

एक बीज आया
बढा— — —
वृक्ष बना
और नन्हीं नन्हीं
कलियाँ छोड़
मिट गया ।

तीन

एक शांति-निकेतन
का मालिक रूठ
धरा से चल दिया।
लाख चाहने पर,
निकेतन अब
शांति-निकेतन
न बन सका।

O O O

तेतीस :

मेरा कल

कभी भविष्य के तट पर आकर
मैंने सोचा,
कल को ढूँढू
और पकड़ कर कह दूँ झटसे—
यह कल तो मेरा है।
पर हर क्षण हर पल
सरक रहा है
आगे आगे
भाग रहा है
वह दिन वह क्षण
जिन्हें लगा कर अन्तस्तल से
कह दूँ सब से
यह है कल, जो मेरा है।

o o o

मुक्ति

मुक्ति
एक परिभाषा है।
जीवन
एक दिखावा
अभिलाषा
मृग – मरीचिका
दु:ख ,
एक शाश्वत तथ्य
टूट कर बिखर गया जो,
मैं यत्न शील हूँ
चुनने को उसका कण कण
दुख का हर झोंका
अब नहीं खलता।
करता नहीं निराश,
क्योंकि दुख और निराशा,
जड़ हृदय पर प्रभावी
नहीं हो सकते।



पैन्तीस :

अश्रुमाला

आंसुओं की एक माला
टिक नहीं सकती नयन में।
क्षीणतम अभिलाष सी
या गहनतम उच्छ्वास सी है।

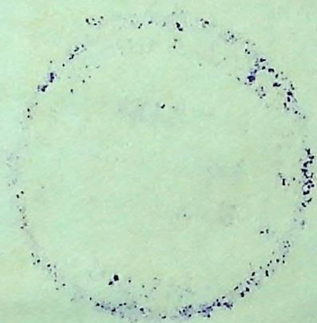
क्या हंसी है और खुशिया
ये सभी अज्ञात सी हैं।
भाव मन के त्रस्त से हैं
जो धरा पर उभर कर
कभी आ नहीं सकते।

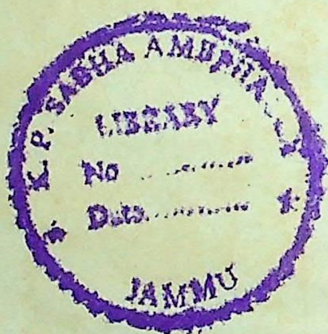
आंसुओं की बाढ़ में
यों खो गई पतवार मेरी
बह गई मंजिलें भी
औं बह गये हैं रास्ते।

इक निराशा व्याप्त है
और आशा क्षीण है
बिन सहारे लक्ष्य हीना
बढ रही हूँ अगम पथ पर

एक गुम - सुम
भाग्य चालित
आंसुओं के मोतियों की— —
मात्र मैं अश्रु माल हूँ।

O O O





सविता शर्मा



जन्म स्थान : साम्बा (जि॰ जम्मू)

शिक्षा : एम. ए, बी. एड

लेखन : कविता, कहानी, लेख, रेडियो वार्ता आदि आदि ।

पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशन : 'सन्मार्ग' कलकत्ता 'पंजाब सौरभ' पटियाला, 'वीर अर्जुन' नई दिल्ली, 'हिन्दी मिलाप' 'पंजाब केसरी' जालन्धर, 'योजना', 'जम्मू व कश्मीर समाचार', शीराज़ा (पंजाबी तथा डोगरी) जम्मू एवं कालेज पत्रिका ।

अन्य विशेष : संगीत, अभिनय, भाषण एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत, राज्य के महिला सांस्कृतिक दल की सदस्या के तौर पर भारत के विभिन्न नगरों में कार्यक्रम, सीनियर एन. सी. सी. आफिसर, कालेज की हाकी टीम की सदस्या, पत्रकार : 'योजना' व 'जम्मू व कश्मीर समाचार' में सम्बद्ध ।

[illegible]

[illegible]